ISSN - 0975-2382

Upuea ECONOMIC JOURNAL

A Biannual-Bilingual Peer Reviewed Refereed Journal of Economics

Volume - 17 Conference No. 17 (Section 1, 2 & 3) April 2022

17th ANNUAL CONFERENCE

(22th and 23th April, 2022)

Covid-19 and the Economy

***

Assessment of Pandemic and Post-pandemic Policies for Vulnerable Sectors and Groups

***

Education, Employment and Skill Development

***

Development Experience & Challenges, and Strategies for India@75

Uttar Pradesh - Uttarakhand Economic Association

Organized By

SHARDA UNIVERSITY

Plot No. 32, 34, Knowledge Park-III, Greater Noida (Delhi-NCR)

Volume 17, Conference 17
April 22-23, 2022

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

A Biannual-Bilingual Refereed Journal of Economics

Contents

THEME 1

Covid-19 and the Economy

1. **Impact of Covid-19 on Exports in India and Government Initiatives** 3
Dr. Aluti Singh

2. **Covid-19 and its Impact on the Indian Economy** 7
Dr. Pratima Gupta & Dr. Manukant Shastri

3. **Economic Impact of Covid-19 on Indian Economy: A Comparative Analysis** 14
Dr. Pradeep Kumar Panda

4. **The Need of Post-Covid-19 Reconstruction and Development Paradigms for Indian Economy** 24
Dr. Sarika Verma, Naveen Ram, Nandan S. Bisht & Padam S. Bisht

5. **Universal Basic Income: Concept and Relevance in Pandemic Influenced Economy** 28
Dr. V.B. Chaurasia & Dr. Pooja Bhandari

6. **bKash: Building Fintech Resilience in Bangladesh during Covid-19 Pandemic** 33
Prof. Neha Zaidi, Dr. Sweta Dixit & Dr. Mohit Maurya

7. **Gendered Impact of COVID-19** 41
Dr. Savita Dwivedi

8. **A Study of the Performance of Selected MSMEs during Covid-19** 47
Dr. Kirti Sharma & Shikha Tomar

9. **A Bibliometric Overview of HR Challenges during COVID-19** 56
Ms. Sonia Yadav & Dr. Sweta Dixit

10. **Covid-19 and its effect on Environment and Human Health** 66
Saurabh Mishra & Dr. Ajay Kumar Srivastava

10. **Effects of Jobless Growth, Income Inequality and High Inflation on Indian Economy: Post Covid-19** 195
Dolly Singh & Girish Mohan Dubey

11. **Consumer Buying Shift with Covid Lockdowns** 204
Dr. Rudresh Pandey

12. **Growth of the Informal Sector: The Rise of Home Chefs and Foodpreneurs during Covid and the Roadmap Ahead** 210
Neha Sharma, Dr. Sweta Dixit & Dr. Mohit Maurya

13. **Infrastructure and Access to Health Care in Mountains: A Study of Uttarakhand State** 215
Prof. M.C. Sati and Rohit S

14. **Covid-19 Pandemic: Its impact on Economy, Society and Environment** 221
Ms. Risha Thakur & Dr. Arora Gaurav Singh

15. **भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रवासन पर कोविड–19 का प्रभाव** 228
डॉ. अनामिका चौधरी

16. **नैनीताल जनपद के हल्द्वानी ब्लाक में कार्यरत महिला कषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन (ग्राम बच्ची नगर न.1, न.2 के विशेष संदर्भ में)** 235
डॉ0 नमिता मिश्रा एवं डॉ0 शालिनी चौधरी

THEME 2
ABBREVIATED PAPERS

17. **Lives and Livelihoods amid Pandemic: Exploring Solutions** 243
Dr. Ved Prakash Mishra & Dr. Garima Maurya

18. **An Investigation of Education System ontribution in Economic Development of India** 247
Shikha Sharma & Loveneet Mishra

19. **Covid-19 Pandemic and Atma Nirbhar Bharat: Opportunities and Challenges** 250
Dr. Angrej Singh

20. **Financial literacy and Covid-19** 253
Anjali Mandal & Dr. Ashish Saxena

21. **Post Covid Transformation in Indian Healthcare Sector: Role of both Private and Public Sector** 254
Dr. Himanshi Puri & Dr. Shalini Mittal

22. **Impact of Covid-19 Pandemic on Indian E-commerce Market** 255
Km Prachi & Dr. Vivek Kumar Nigam

23. **Hybrid Work Model: Coping Organizational Unrest Post Covid-19 Pandemic Through New Era of Organisational Working** 261
Dr. Surendra Kumar & Mrs. Vibhuti Vishnoi

नैनीताल जनपद के हल्द्वानी ब्लाक में कार्यरत महिला कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन (ग्राम बच्ची नगर न. 1, न. 2 के विशेष संदर्भ में)

डॉ0 नमिता मिश्रा* एवं डॉ0 शालिनी चौधरी **

प्रस्तावना

भारत के कृषि क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भूमिका कई वर्षो से रही है। प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक एम० एस० स्वामीनाथन के अनुसार महिलाओं ने ही सर्वप्रथम फसली पौधों का प्रयोग करके खेती की कला का वैज्ञानिक विकास किया, इस पर भी इन महिलाओं को कृषक के रूप में मान्यता ना मिलकर कृषि कार्य के सहायक या खेतिहर मजदूर के रूप में जाना गया। कृषि जनगणना के अनुसार 73.2 % ग्रामीण महिलाएं कृषि कार्यों से जुड़ी है परन्तु उनमे से केवल 8 % महिलाओं के पास ही कृषि भूमि का मालिकाना हक प्राप्त है।

भारत मानव विकास सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार पुरुष श्रमिकों को 83 % भूमि विरासत में मिली है जबकि महिलाओं को केवल 2 % भूमि ही विरासत में मिली है। वर्ष 2019–20 में कृषि का सकल घरेलु उत्पाद में (GDP) में 17.8% योगदान था जोकि वर्ष 2020–21 में बढ़ कर 19.9 % हो गया है। यह वृद्धि कोविड–19 महामारी के दौरान कृषि उपज की विकास दर में 3.4 % की वृद्धि के कारण हुई है।

उत्तराखण्ड की महिलाओं की भी कृषि कार्यो में भागीदारी है क्योंकि यहाँ के अधिकांश पुरुष रोजगार की खोज में शहरों को पलायन कर चुके हैं। उत्तराखण्ड वर्ष 2011 की जनगणना आधारित रिपोर्ट में 40.81% कृषि उत्पादकों में 28.82 % पुरुष व 64 %महिलाएं है। इसमें 11.23% पुरुष कृषि श्रमिक व 8.84 % महिलाएं ही कृषि श्रमिक है। महिलाएं बीज की बुवाई से लेकर निराई, गुड़ाई खाद डालना, पानी आदि की व्यवस्था करती है जबकि पुरुष केवल हल लगाने का कार्य करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

(1) अध्ययन क्षेत्र में कार्यरत महिला कृषि श्रमिकों की कृषि द्वारा रोजगार सृजन का अध्ययन करना।

(2) अध्ययन क्षेत्र में कार्यरत महिला कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

(3) अध्ययन क्षेत्र में कार्यरत महिला कृषि श्रमिकों की स्थिति में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

* सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, रानीखेत उत्तराखण्ड

** सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी उत्तराखण्ड

परिकल्पना

H0 कृषि उद्योग द्वारा महिला कृषि श्रमिकों का रोजगार सृजन में कोई योगदान नहीं है।

H1 कृषि उद्योग द्वारा महिला कृषि श्रमिकों का रोजगार सृजन में योगदान है।

H0 कृषि उद्योग महिला श्रमिकों के आर्थिक विकास में योगदान नहीं है।

H1 कृषि उद्योग का महिला श्रमिकों के आर्थिक विकास में योगदान है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र नैनीताल जिले के हल्द्वानी ब्लाक के बच्ची नगर न०–1, व बच्ची नगर–02 ग्राम के सूचनादाताओं पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र के 159 परिवारों की कुल जनसंख्या 829 है, जिसमें से 70 सूचनादाताओं का चयन स्तरीय दैव निदर्शन प्रणाली द्व ारा किया गया है। जिसमें 18 वर्ष से 60 वर्ष तक की महिला श्रमिकों को सम्मिलित किया गया है। आकड़ों का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक समंकों के आधार पर किया गया है। प्राथमिक समंकों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची, प्रत्यक्ष अवलोकन तथा द्वितीयक समंको के लिए स्थानीय स्वशासन से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों, गठित आयोग की रिपोर्ट, उपलब्ध लेख एवं शोध पत्र पत्रिकाएँ, विभिन्न वेबसाइट इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण

तालिका संख्या 1.1: अध्ययन क्षेत्र में महिला श्रमिकों की शिक्षा का स्तर

क्रम संख्या	शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	34	56.67
2.	प्राथमिक	19	31.67
3.	आठवीं	05	8.33
4.	इंटर या उससे ऊपर	02	3.33
5.	कुल	60	100

प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

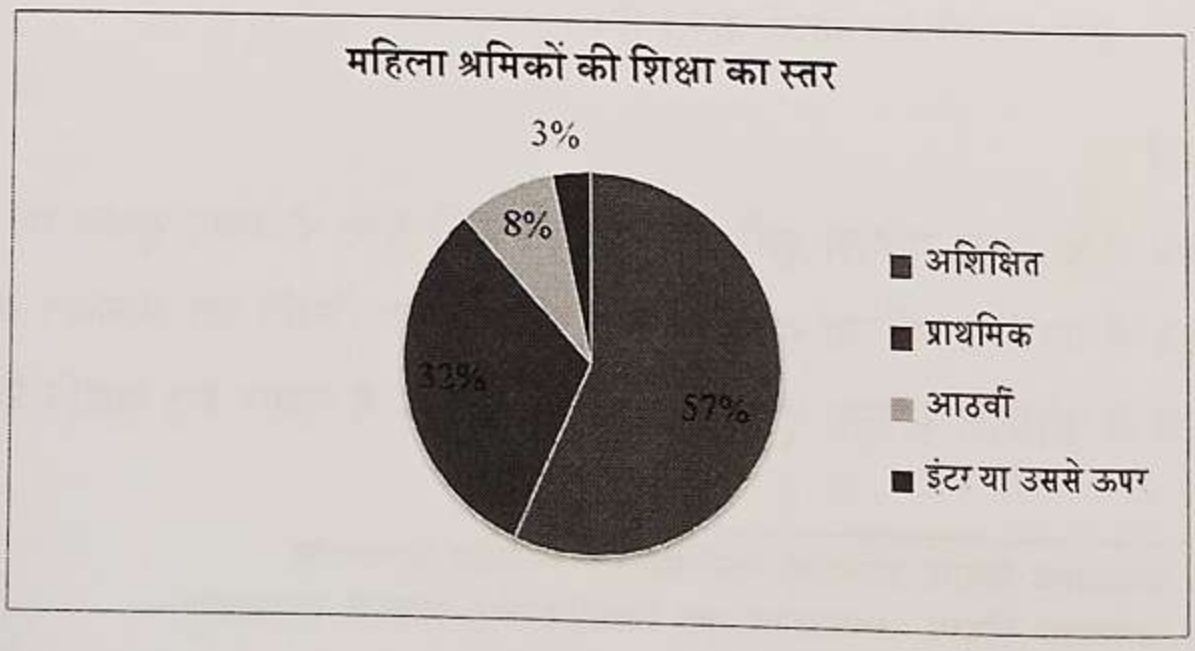

तालिका संख्या 1.2: अध्ययन क्षेत्र में महिला श्रमिकों का जमीन पर मालिकाना हक का स्तर

क्रम संख्या	जमीन पर मालिकाना हक	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	06	10.00
2.	नहीं	41	68.33
3.	पता नहीं	13	21.66
4.	कुल	60	100

प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

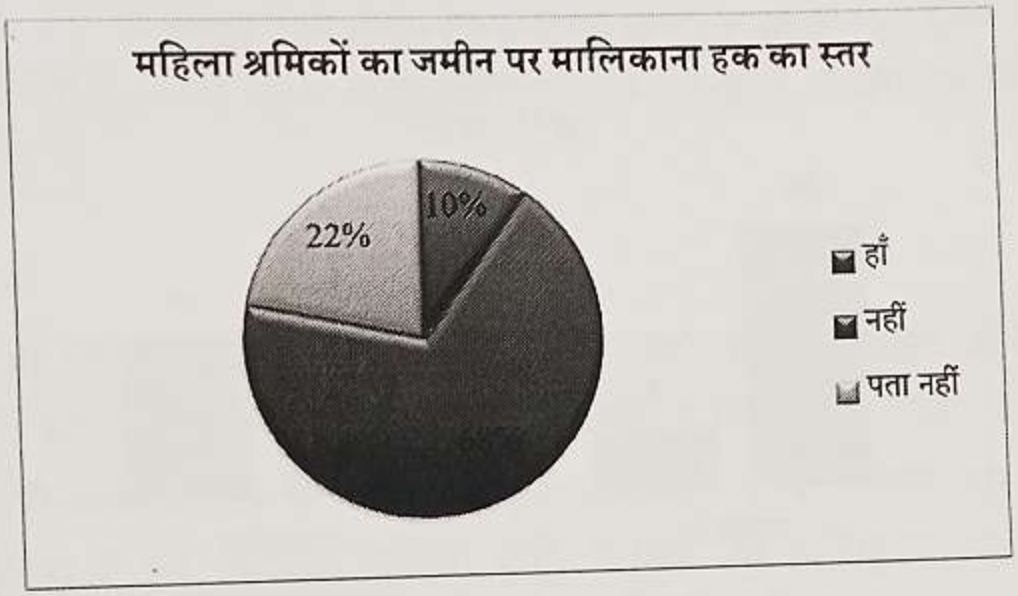

तालिका संख्या 1.3: अध्ययन क्षेत्र में महिला श्रमिकों का मासिक मजदूरी का स्तर
(कृषि तथा गैर कृषि क्षेत्र)

क्रम संख्या	मासिक मजदूरी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	0 – 5,000	19	31.67
2.	5,000 – 10,000	16	26.67
3.	10,000 – 15,000	22	36.66
4.	15,000 – 20,000	03	5.00
5.	कुल	60	100

प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

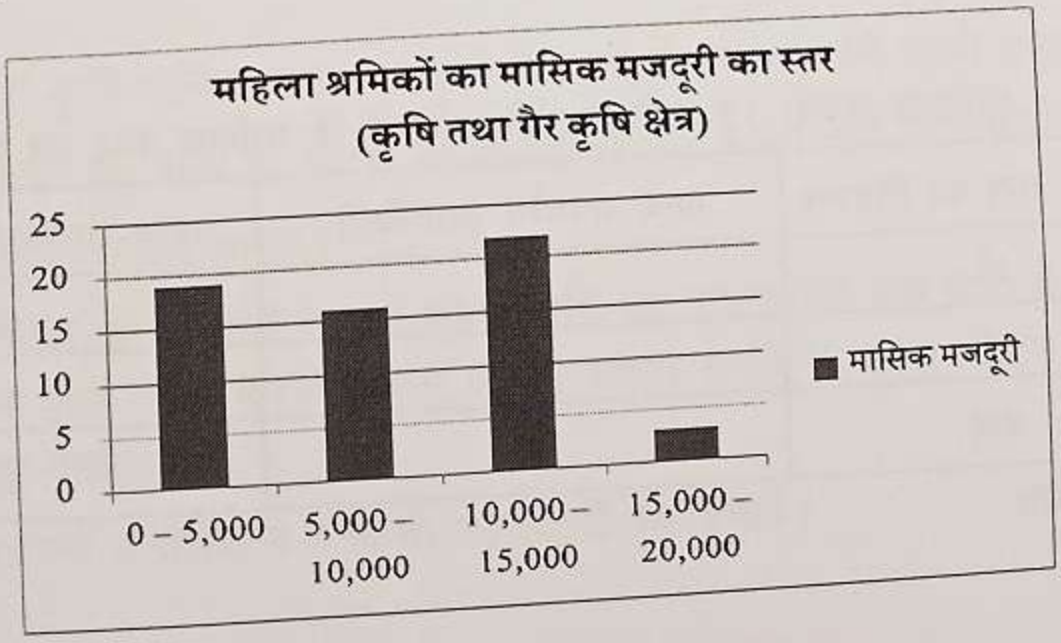

तालिका संख्या 1.4: अध्ययन क्षेत्र में कृषि उपज के विपणन की समस्या का विवरण

क्रम संख्या	विपणन समस्या	आर्थिक प्रभाव से प्रभावित	आर्थिक प्रभाव से अप्रभावित	योग
1.	हाँ	26	12	38
2.	नहीं	06	16	22
3.	कुल	32	28	60

प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

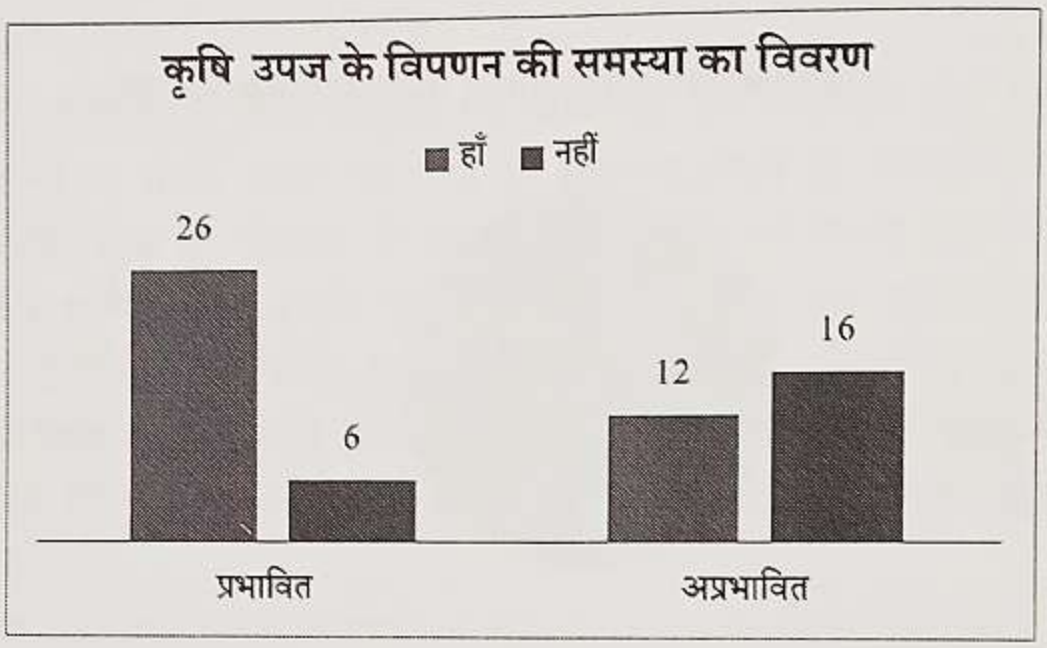

अवलोकित fo	Fe	fo-fe	$(fo-fe)^2$	$(fo-fe)^2 / fe$
26	20.27	5.73	32.83	1.62
06	11.73	− 5.73	32.83	2.8
12	17.73	− 5.73	32.83	1.85
16	10.25	5.73	32.83	3.2
काई वर्ग				**9.48**

5%. सार्थकता स्तर d.f. के लिए काई वर्ग का सारणी मूल्य = 3.8415, चूंकि काई वर्ग का परिकलित मूल्य सारणी मूल्य से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना असत्य है। कृषि उद्योग द्वारा महिला कृषि श्रमिकों का रोजगार सृजन में योगदान है।

तालिका संख्या 1.5: महिला कृषि श्रमिकों के आर्थिक स्तर का विवरण

क्रम संख्या	आर्थिक स्तर का विवरण	अन्य उपभोग (प्रभावित)	अन्य उपभोग (अप्रभावित)	योग
1.	हाँ	30	07	37
2.	नहीं	09	14	21
3.	कुल	37	23	60

प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित

अवलोकित fo	Fe	fo-fe	$(fo-fe)^2$	$(fo-fe)^2 / fe$
30	24.05	5.95	35.40	1.47
07	12.95	− 5.95	35.40	2.73
09	14.95	− 5.95	35.40	2.36
14	08.05	5.95	35.40	4.39
काई वर्ग				**10.95**

5%. सार्थकता स्तर d.f. के लिए काई वर्ग का सारणी मूल्य = 3.8415, चूंकि काई वर्ग का परिकलित मूल्य सारणी मूल्य से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना असत्य है। कृषि उद्योग का महिला श्रमिकों के आर्थिक विकास का योगदान है।

विश्लेषण

(1) प्रस्तुत बार चार्ट से पता चलता है कि अशिक्षित महिलाओं का स्तर बहुत अधिक 56.67 % है, जबकि प्राथानिक, आठवीं, इंटर या उससे ऊपर क्रमशः 31.67%, 8.33% और 3.33% है।

(2) प्रस्तुत पाई चार्ट से पता चलता है कि केवल 10% महिला कृषि श्रमिकों का ही अपनी कृषि भूमि पर मालिकाना हक प्राप्त है एवं 68.33% महिला कृषि श्रमिकों को मालिकाना हक प्राप्त नहीं है। साथ ही 21.66% महिला कृषि श्रमिकों को इस संदर्भ कोई जानकारी नहीं है।

(3) प्रस्तुत पाई चार्ट से पता चलता है कि कृषि तथा गैर कृषि स्रोत से प्रतिमाह 15000 रुपये कामने वाली महिलाओं का प्रतिशत 36.66% है तथा 5,000 तक 31.67%, 5,000 से 10,000 तक 26.67% एवं केवल 5% महिलाएं 15,000 से 25,000 रुपये प्रतिमाह कमाती है।

(4) प्रस्तुत बार चित्र से पता चलता है कि कृषि क्षेत्र में कार्य करने से महिलाओं को आय प्राप्त होती है, जिससे उनमें आर्थिक निर्भरता की कमी पाई गई तथा महिलाओं में बचत की प्रवृत्ति पाई गई है। 48 प्रतिशत महिलाएं बचत को घर पर ही रखती है जबकि 22 प्रतिशत महिलाएं बचत को बैंक व 30 प्रतिशत महिलाएं स्वयं सहायता समूह में बचत को जमा करती है।

समस्याएँ

प्रस्तुत अध्ययन में महिला कृषि श्रमिक उत्तर दाताओं के सम्मुख उत्पन्न होने वाली प्रमुख समस्याएं निम्न है।

- उत्तरदाताओं में शिक्षा की कमी के चलते सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का ज्ञान ना होगा।
- पानी की उचित व्यवस्था का अभाव।
- उत्तरदाताओं में केवल 10 प्रतिशत का ही अपनी भूमि पर मालिकाना हक प्राप्त है बल्कि अपनी या किसी अन्य की भूमि पर कृषि कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं, जिस कारण वहाँ महिलाएं के साथ शोषण की समस्या देखी गई।
- स्वरोजगार के अवसरों व प्रशिक्षण सम्बन्धी जानकारी का अभाव।

निष्कर्ष एवं सुझाव

- उत्तरदाताओं में कृषि कार्य करके रोजगार व आय का सृजन हुआ है, जिससे कृषि श्रमिक महिलाओं की आर्थिक निर्भरता कम हुई है। उनके उपभोग स्तर में वृद्धि भी हुई है परन्तु यह वृद्धि उनके द्वारा किए गए श्रम की अपेक्षा कम है।
- महिला कृषि श्रमिकों को आर्थिक विकास हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का समुचित प्रयोग करना चाहिए। सरकार द्वारा इन महिलाओं के लिए गैर कृषि क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए चूँकि कृषि महिला श्रमिक असंगठित क्षेत्रों में ही पाए जाते है। अतः इनकी आय को निश्चित किया जाना चाहिए।
- सरकार द्वारा कृषि हेतु अनुदान व ब्याज की दर को कम किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- उत्तराखण्ड सांख्यिकी डायरी
- अग्रवाल एन० एल० भारतीय कृषि का अर्थशास्त्र
- योजना
- कुक्षेत्र
- भारतीय अर्थव्यवस्था : मिश्रा एवं पुरी
- Government of India Employment, Ministry of Labour
- https://www.downtoearth.org.in viewed at 29th Nov
- https: // hindiindiawater portal.
- https: //www.zigya.com
- bbe. com. cdn. ampproject.org